International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 04-11-2022; Accepted: 20-11-2022; Published: 07-12-2022
Volume 8, Issue 6, 2022, Page No. 101-103

नारी शिक्षा का आर्थिक गतिविधियों और पारिवारिक सम्बंधों पर प्रभाव (मुरैना जिले के ग्रामीण क्षेत्र के विषेष संदर्भ में)

मंजू अग्रवाल
शोधार्थी, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
महिलाऐं व्यक्तिगत दृष्टि से ही नहीं वरन् सामाजिक दृष्टि से भी देश के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ग्रामीण समाज महिलाओं द्वारा किये गये श्रम पर निर्भर है। महिलाऐ ग्रामीण समाज की नींव है। समाज में समाज के लिये महिला का स्वस्थ, खुशहाल, शिक्षित, समझदार, व्यवहार कुशल, बुद्धिमान होना आवश्यक है और वह शिक्षा से ही सम्भव है। यदि महिलाओं की स्वयं की स्थिति सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, शैक्षणिक आदि दृष्टिकोणों से निम्न होगी तो वह परिवार, समाज और राष्ट्र के विकास में अपना योगदान नहीं दे पायेगी। शिक्षा के अभाव में महिलाओं का सशक्तिरण असम्भव है। यदि पुरूष शिक्षित है तो मात्र एक व्यक्ति शिक्षित होता है परन्तु यदि एक महिला शिक्षित होती है तो पूरा राष्ट्र शिक्षित होता है।

मूल शब्दः नारी शिक्षा, पारिवारिक सम्बंधों, ग्रामीण क्षेत्र

प्रस्तावना
नारी ईश्वर की अनमोल रचना है। परिवार, समाज व देश के विकास में बहुत महत्वपूर्ण योगदान होता है। किन्तु हमारे देश के ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी नारी जाति का पतन हो रहा है। ग्रामीण समाज में पितृसत्तात्मक प्रणाली विद्यमान है जहाँ पुरूषों का बोलवाला है।

वर्तमान समय महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ है, किन्तु पूर्णतः नहीं। शहरी क्षेत्रों में महिलाऐ अपने अधिकारों की प्रति सजग है और उन्हें पढ़ने लिखने की पूर्णतः स्वतंत्रता है किन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाऐं आज भी चार दीवारी में कैद होकर पर्दा प्रथा जैसी कुप्रथाओं का शिकार हो रही है तथा आज भी उनका जीवन घरेलू कामकाजों तक ही सीमित है।

ग्रामीण क्षेत्र में आज भी बालक और बालिका में भेदभाव किया जाता है। जहॉ एक ओर बालकों की पढ़ाई–लिखाई पर, खान–पान पर तथा अन्य सुविधाओं पर अधिक ध्यान दिया जाता है वहीं दूसरी और बालिकाओं की शिक्षा पर तथा अन्य सुविधाओं पर कम ध्यान दिया जाता है कुछ गॉव तो ऐसे भी है जहाँ बालिकाओं को स्कूल ही नही भेजा जाता है।

ग्रामीण भारत में महिला सशक्तिकरण एक लम्बी और कठिन प्रक्रिया है क्योंकि यह वस्तुतः समाज में उनकी हैसीयत से जुड़ा मुद्दा है। शिक्षा के द्वारा ही महिलाओं का सशक्तिकरण सम्भव है शिक्षा किसी भी व्यक्ति के मजबूत जीवन की आधारशिला तैयार करती है शिक्षा के द्वारा ही एक महिला अबला से सबला बनती है।

उन्नीसवी शताब्दी में पश्चिमी शिक्षा के आगमन के फलस्वरूप महिला अधिकारों की मांग जोर पकड़ने लगी तथा महिलाओं की शिक्षा को बढ़ावा दिया जाने लगा भारत में 1915 से 1927 के बीच कई महिला संगठन की व्यवस्था की गई। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 8 मार्च 1975 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाने लगा है।

सम्बंधित साहित्य समीक्षा
1. शर्मा प्रेमलता ने अपने अध्ययन में बताया (2011)
जब कोई सामाजिक विकास का कार्यक्रम तया किया जाये तब उसके शैक्षणिक पक्ष की ओर अवश्य ध्यान देना चाहिए। उन सभी तथ्यों को नहीं भूलना चाहिए, जो कि ग्रामीण अंचल में किसी आधुनिकता की अनुमति में महत्वपूर्ण स्थान रखते है। महिलाओं की शिक्षा का कार्यक्रम निर्धारित करते समय उन सांस्कृतिक तथ्यों का विशेष ध्यान रखना चाहिए, जो कि ग्रामीण शिक्षा को अधिक सुदृढ़ बना सकते है।

2. भार्गव वंदना ने अपने अध्ययन में बताया (2016)
''शिक्षा एक ऐसा रत्न हैं, जो इंसान और जानवर में फर्क निश्चित करती है। शिक्षा के बिना इंसान जानवरों से भी बदत्तर है।'' शिक्षा इंसान की प्राथमिक जरूरत है। हमारे समाज में पुरूष की शिक्षा पर तो प्रारम्भ से बल दिया जाता है परन्तु महिलाओं की शिक्षा पर कोई ठोस विचार नहीं जाता है। आज उच्च वर्ग की महिलाऐं तो शिक्षित हैं, परन्तु कुछ गाँवों में आज भी महिला शिक्षा उपलब्ध नहीं हैं, वहाँ सिर्फ घर के कामों तक महिलाओं को सीमित रखा जाता है।

3. खान मोहम्मद, निषा ने अपने अध्ययन में बताया (2016)
महिलाओं का जीवन घरेलू कार्यों तक ही सीमित है। इसके दो मुख्य कारण है पहला तो यह कि महिला शिक्षित नहीं है तथा अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं है। दूसरा कारण यह है कि, सर्वे क्षेत्र में पितृसत्तात्मक भावना व्याप्त है इसकी बजह से पुरूषों द्वारा महिलाओं को घर में कैद कर दिया गया है।

4. मुक्ता चिंतन ने अपने अध्ययन में बताया (2019)
"महिला व पुरूष समाज में गाड़ी के दो पहिए की तरह कार्य करते है यदि एक कमजोर हो जाऐगा तो दूसरे की गति स्वतः ही धीमी हो जाऐगी। समाज में उन्नति के लिए दोनों का आपसी सामंजस्य बहुत अनिवार्य है।'' वर्षों से प्रचलित महिलाओं के खिलाफ रूढ़ियों, अंधविश्वास जैसी कुरीतियों से उन्हें मुक्त कराना है। यदि महिला व पुरूष दोनों साथ चले तो समाज को एक नई दिशा प्रदान करने में सहायक सिद्ध होगा।

शोध के उद्देश्य
प्रस्तुत शोध में निम्न उद्देश्यों को निर्धारण किया गया हैः–
1. महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति का अध्ययन करना।
2. महिलाआ शिक्षा का आर्थिक गतिविधियों एवं पड़ने वाले व्यवहार का अध्ययन करना।
3. पारिवारिक स्वरूप में महिला शिक्षा की भूमिका का अध्ययन।

उपकल्पनाएँ

उपकल्पना एक अभिव्यक्ति है जो शोधार्थी के लिए दिग्दर्शिका का कार्य करती है। यह शोधार्थी के सामान्य ज्ञान के अनुकूल होती है जो परीक्षण के उपरान्त गलत तथा सही हो सकती है। शोध को महत्वपूर्ण एवं उपयोगी बनाने के लिए शोध अध्ययन में उपकल्पनाओं का निर्माण किया गया है, जो निम्न प्रकार हैः–

1. ग्रामीण समाज में पुरुष प्रधान होने से महिलाऐ की स्थिति निम्न है।
2. ग्रामीण महिलाओं के अशिक्षित होने के कारण उनकी सामाजिक स्थिति दैयनीय है।

अध्ययन क्षेत्र व समग्र

प्रस्तुत शोध पत्र में मुरैना जिले को अध्ययन क्षेत्र चुना गया है। यह मध्यप्रदेश राज्य भारत के हृदयांश में स्थित है इसीलिए पं. जवाहरलाल नेहरू ने इसे हृदय प्रदेश के नाम से सम्बोधित किया है। मुरैना जिला मध्यप्रदेश के पश्चिम उत्तर में स्थित है। यह चम्बल संभाग के अन्तर्गत आता है। मुरैना जिला मध्यप्रदेश का प्रवेशद्वार भी कहलाता है। मुरैना जिले में 8 तहसील है, जो क्रमशः इस प्रकार है अम्बाह, पोरसा, मुरैना नगर, मुरैना ग्रामीण, जौरा, कैलारस, सबलगढ़ तथा बानमौर। मुरैना जिले में 6 विधानसभा, 489 ग्राम पंचायत, 8 जनपद पंचायत, 832 गाँव व एक जिला पंचायत द्वारा विकास कार्यक्रमों का क्रियान्वयन किया जाता है।

मुरैना जिले के ग्रामीण क्षेत्र की महिलाएँ अध्ययन का समग्र है। समंको के चयन हेतु दैव निदर्शन पद्धति के लॉटरी प्रणाली का प्रयोग कर ग्रामीण क्षेत्र की 100 महिलाओं का चयन किया गया है। जिनमें 70 विवाहित तथा 30 अविवाहित है।

शोध प्रविधि व तथ्य संकलन

प्रस्तुत शोध पत्र वर्णानात्मक अभिकल्प पर आधारित है। तथ्यों का संकलन प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोंतों के माध्यम से किया गया है तथा सामाजिक सर्वेक्षण में साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है। अध्ययन की पूर्ति के लिये विभिन्न समाज शास्त्रियों, विद्वानों के विचार को प्रकाश में लाकर ग्रामीण महिलाओं की दशा का सूक्ष्म स्तरीय समाज–शास्त्रीय अध्ययन किया गया है।

तथ्यों का विश्लेषण

मुरैना जिले के ग्रामीण क्षेत्र में नारी शिक्षा का आर्थिक गतिविधियों और पारिवारिक सम्बन्धों पर प्रभाव का विश्लेषण निम्न तालिकाओं के माध्यम से किया गया है।

तालिका 1: उत्तरदाताओं की आयु

क्र.	आयु	संख्या	प्रतिषत
1.	20 वर्ष से कम	50	50.00
2.	20 वर्ष से अधिक	50	50.00
योग		100	100.00

तालिका क्र. 1 से स्पष्ट है कि 50 (50 प्रतिशत) महिला उत्तरदाताओं की आयु 20 वर्ष से कम तथा 50 (50 प्रतिशत) महिला उत्तरदाताओं की आयु 20 वर्ष वर्ष से अधिक है।

तालिका 2: उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति

क्र.	वैवाहिक स्थिति	संख्या	प्रतिषत
1.	विवाहित	70	70.00
2.	अविवाहित	30	30.00
योग		100	100.00

तालिका क्र. 2 से स्पष्ट है कि 70 (70 प्रतिशत) महिला उत्तरदाता विवाहित है तथा 30 (30 प्रतिशत) महिला उत्तरदाता अविवाहित है।

तालिका 3: उत्तरदाताओं शैक्षणिक स्थिति

क्र.	शैक्षणिक स्थिति	संख्या	प्रतिषत
1.	प्राथमिक	36	36.00
2.	मिडिल	26	26.00
3.	हाईस्कूल	22	22.00
4.	हायर सेकेण्डरी	13	13.00
5.	स्नातक	03	03.00
6.	अन्य	01	1.00
योग		100	100.00

प्राप्त ऑकड़े बताते है कि 36 (36 प्रतिशत) महिलाओं ने प्राथमिक शिक्षा ही ग्रहण की है व 26 (26 प्रतिशत) महिलाओं ने मिडिल, 22 (22 प्रतिशत) महिलाओं ने हाईस्कूल, 13 (13 प्रतिशत) महिलाओं ने हायर सेकेण्डरी शिक्षा ग्रहण की है व केबल 03 (03 प्रतिशत) महिलाओं ने स्नातक की शिक्षा तथा 01 (01 प्रतिशत) महिलाओं ने अन्य स्तर की शिक्षा ग्रहण की है।

तालिका 4: उत्तरदाताओं की व्यवसायिक स्थिति

क्र.	व्यवसायिक स्थिति	संख्या	प्रतिषत
1.	शासकीय सेवा	11	11.00
2.	अशासकीय सेवा	33	33.00
3.	ग्रहकार्य	20	20.00
4.	कृषि	36	36.00
योग		100	100.00

तालिका क्रमांक 4 से स्पष्ट है, कि 11 (11 प्रतिशत) महिलाऐं शासकीय सेवा में नियुक्त है, 33 (33 प्रतिशत) महिला अशासकीय सेवा तथा 20 (20 प्रतिशत) महिला ग्रहकार्य में नियुक्त है जबकि 36 (36 प्रतिशत) महिला कृषि सेवा में नियुक्त है।

तालिका 5: पारिवारिक निर्णय लेने की अनुमति

क्र.	पारिवारिक निर्णय	संख्या	प्रतिषत
1.	अनुमति है	28	28.00
2.	अनुमति नहीं है	60	60.00
3.	कह नही सकते	12	12.00
योग		100	100.00

प्राप्त ऑकड़े दर्शाते है शिक्षा के कारण महिलाओं की पारिवारिक निर्णय लेने की स्थिति में बदलाव आता है। 28 (28 प्रतिशत) महिलाओं को पारिवारिक निर्णय लेने की अनुमति है तथा 60 (60 प्रतिशत) महिलाओं को पारिवारिक निर्णय लेने की अनुमति नही है जबकि 12 (12 प्रतिशत) महिलाओं ने इस सम्बन्ध में उत्तर नही दिया है।

तालिका 6: पारिवारिक सम्बंधों पर शिक्षा का प्रभाव

क्र.	शिक्षा का प्रभाव	संख्या	प्रतिषत
1.	अच्छा	50	50.00
2.	खराब	32	32.00
3.	कह नही सकते	18	18.00
योग		100	100.00

शिक्षा राष्ट्र के निर्माण में एक आवश्यक कढ़ी है। इसका पारिवारिक सम्बन्धों पर भी गहरा प्रभाव पड़ता है। 50 (50 प्रतिशत) महिला उत्तरदाताओं ने बताया कि पारिवारिक सम्बंधों

पर शिक्षा का प्रभाव अच्छा पड़ता है वही 32 (32 प्रतिशत) महिला उत्तरदाताओं ने बताया कि पारिवार पर शिक्षा का प्रभाव खराब पड़ता है। जबकि 18 (18 प्रतिशत) महिला उत्तरदाताओं ने जबाव देने से इंकार कर दिया।

तालिका 7: आर्थिक निवेष में निर्णय

क्र.	निवेष में निर्णय	संख्या	प्रतिषत
1.	पिता/पति	65	65.00
2.	स्वयं	35	35.00
योग		100	100.00

भारत एक पुरूष प्रधान देश है यहाँ पितृसत्तात्मक प्रथा विद्यमान है 65 (65 प्रतिशत) महिलाओं ने बताया कि ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक निवेश का निर्णय पिता या पति के द्वारा ही लिया जाता है जबकि 35 (35 प्रतिशत) महिला उत्तरदाताओं ने बताया कि आर्थिक निवेश का निर्णय वह स्वयं लेती है।

तालिका 8: अषिक्षित होने के कारण

क्र.	अषिक्षा का कारण	संख्या	प्रतिषत
1.	जागरूकता का अभाव	59	59.00
2.	पारिवारिक सम्बंधों के कारण	41	41.00
योग		100	100.00

तालिका क्र. 8 में 59 (59 प्रतिशत) महिलाओं ने बताया कि ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं का अशिक्षित होने का मुख्य कारण जागरूकता का अभाव है तथा 41 (41 प्रतिशत) महिला उत्तरदाताओं ने बताया कि ग्रामीण क्षेत्र में पारिवारिक सम्बंधों के कारण महिलाऐ अशिक्षित है।

तालिका 9: सामाजिक स्थिति में परिवर्तन

क्र.	सामाजिक स्थिति	संख्या	प्रतिषत
1.	परिवर्तन होता है	79	79.00
2.	परिवर्तन नहीं होता है	21	21.00
योग		100	100.00

तालिका से स्पष्ट होता कि 79 (79 प्रतिशत) महिलाओं का मानना है कि शिक्षा से सामाजिक स्थिति में परिवर्तन आया है, जबकि 21 (21 प्रतिशत) महिलाओं का मानना है, कि शिक्षा से सामाजिक स्थिति में परिवर्तन नहीं आता है।

उपकल्पनाओं का सत्यापन

1. ग्रामीण समाज में पुरुष प्रधान होने से महिलाऐ की स्थिति निम्न है– भारत एक पुरूष प्रधान देश है यहाँ पितृसत्तात्मक प्रथा विद्यमान है 65 (65 प्रतिशत) महिलाओं ने बताया कि ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक निवेश का निर्णय पिता या पति के द्वारा ही लिया जाता है जबकि 35 (35 प्रतिशत) महिला उत्तरदाताओं ने बताया कि आर्थिक निवेश का निर्णय वह स्वयं लेती है। अतः यह उपकल्पना **सत्य** सिद्ध होती है।
2. ग्रामीण महिलाओं के अशिक्षित होने के कारण उनकी सामाजिक स्थिति दैयनीय है– 79 (79 प्रतिशत) महिलाओं का मानना है कि शिक्षा से सामाजिक स्थिति में परिवर्तन आया है, जबकि 21 (21 प्रतिशत) महिलाओं का मानना है, कि शिक्षा से सामाजिक स्थिति में परिवर्तन नहीं आता है। अतः शिक्षा के कारण महिलाओं की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन अत्यधिक होता है। यह उपकल्पना सत्य सिद्ध होती है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

उपयुक्त अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि जैसे–जैसे महिलाओं का शिक्षा की ओर रूझान बड़ा अर्थात् वे शिक्षित हुई है वैसे–वैसे वे सामाजिक, आर्थिक व शैक्षणिक क्षेत्र में भी सुदृढ़ हुई है तथा आत्मनिर्भर बनी है। ग्रामीण महिलाए शिक्षा की कमी के कारण आत्मनिर्भर नही है वे आर्थिक रूप से पुरूषों पर निर्भर है व अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं है जिस कारण वह अपने प्रति हो रहे विद्वेष और पक्षपात का विरोध नहीं कर पाती, है।

सुझाव

वर्तमान समय में सरकार महिलाओं के उत्थान के लिए अनेक कार्यक्रम एवं योजनाओं का संचालकन कर रही है वरन् ग्रामीण क्षेत्रों में इन योजनाओं का क्रियान्वयन उचित ढंग से नहीं पहुँच रहा है इस कारण महिलाओं को अपेक्षित लाभ नहीं मिल पा रहा है।

1. समाज में व्याप्त कुप्रथाओं (बाल विवाह, दहेज प्रथा, विधवा पुनर्विवाह, पर्दा प्रथा, वैश्यावृत्ति, स्वास्थ्य समस्या, आर्थिक समस्या आदि) को रोकने के लिए शिक्षा अत्यन्त आवश्यक कढ़ी है।
2. महिलाओं को शिक्षा के प्रति जागरूक करना चाहिए।
3. ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक व आर्थिक स्थिति में बदलाव के लिए उन्हें शिक्षा के प्रति आकर्षित करना चाहिए।
4. ग्रामीण व्यक्तियों को शिक्षा के प्रति आकर्षित करवाए तथा शिक्षा का महत्व समझाए।
5. पुरूषों के समान महिलाओं एक समान अधिकार मिलने चाहिए तभी हम एक अच्छे व सुदृढ़ समाज की स्थापना कर सकते है।

संदर्भ सूची

1. प्रेमलता शर्मा, ''समाजशास्त्र और समाज कल्याण'' करण पेपरबेक्स, नई दिल्ली–2011
2. भार्गव, वंदना, ''स्त्री शिक्षा का महत्व'' 2016
3. खान, मोहम्मद निशा, महिला शिक्षा तथा आर्थिक गतिविधिया एवं परिवार के आकार में अंतरसंबंध (नगरीय क्षेत्र बहेड़ी के संबंध में एक विश्लेषण)–2016
4. मुक्ता चिंतन, वर्जन साहित्य पीठ प्रकाशन, जयपुर–2019
5. हेमन्त कुमार, ग्रामीण महिला सशक्तिकरण एवं शिक्षा–2021
6. सारथी कुमारी, महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका–2019